वर्ष : 9 अंक : 32

मूल्य : ₹ 20

चिंतन दिशा

साहित्य और समाज विमर्श का त्रैमासिक

■ **आलेख** : अक्टूबर क्रांति और मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र ■ धर्म और साहित्य ■ मुंबई केन्द्रित हिन्दी उपन्यास : एक आकलन
■ **समाज-विमर्श:** पुस्तक संस्कृति : विश्वसनीयता का संकट ■ **संस्मरण** : डॉ. चंद्रभूषण तिवारी
■ **उर्दू कहानी** : कुल्हाड़ी / डोंगर वाड़ी के गिद्ध ■ **कविताएं:** विनोद कुमार श्रीवास्तव, भारतरत्न भार्गव, मलय, सुरेश सलिल, वेद राही, हरि मृदुल, मंजु चन्द्र ■ पुस्तक समीक्षा ■ **ग़ज़लें:** डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ' व विज्ञान व्रत
एवं अन्य स्थायी स्तंभ...

संपादक : हृदयेश मयंक

REG. NO. MAH-HIN-39947/86

चिंतन दिशा

वर्ष 9 ■ अंक 32
जुलाई-सितंबर, 2018

सलाहकार संपादक
विनोद कुमार श्रीवास्तव

परामर्श एवं संपादन सहयोग
रमेश राजहंस
राकेश शर्मा
रमन मिश्र
शैलेश सिंह

संपादक
हृदयेश मयंक

संपादकीय कार्यालय
ए-701, आशीर्वाद-1, पूनम सागर
कॉम्पलेक्स, मीरा रोड (पूर्व),
मुंबई 401107. संपर्क : 09869118707
email : chintandisha@gmail.com

अक्षर संयोजन एवं लेआउट
reckon creations
09819615352 / 9987379849
email : reckoncreations24@gmail.com

सदस्यता शुल्क
एक प्रति : 20 रुपए
वार्षिक : 150 रुपए
आजीवन : 10,000 रुपए
सहयोगी : 5000 रुपए

विदेशों के लिए :
20 अमेरिकी डॉलर
चेक/ड्रॉफ्ट 'चिंतन दिशा' के नाम से
रेखांकित करें। ऑन लाइन सदस्यता
शुल्क/सहयोग राशि के लिए
इलाहाबाद बैंक (मीरा रोड)
खाता क्रमांक : 50034426754
IFSC : ALLA0212110

सभी पद अवैतनिक। न्याय क्षेत्र, मुंबई

पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचारों से संपादक और परामर्शदाताओं का सहमत होना जरूरी नहीं है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक एवं
संपादक हृदयेश मयंक ने मिलेनियम आर्ट्स,
डी-19-20, आकुर्ली इंडस्ट्रीयल इस्टेट,
कांदिवली (पूर्व), मुंबई से छपवाकर शॉप नं. 3,
आई-59/60, नवग्रह अपार्टमेंट,
पूनम सागर कॉम्पलेक्स,
मीरा रोड (पूर्व), से प्रकाशित।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

- कार्ल मार्क्स की 200वीं सालगिरह / हृदयेश मयंक - **05**

आलेख

- अक्टूबर क्रांति और मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र / विजेंद्र - **07**
- धर्म और साहित्य / वेद राही - **11**
- मुंबई केन्द्रित हिन्दी उपन्यास : एक आकलन / रीता दास राम - **14**

समाज-विमर्श

- पुस्तक संस्कृति : विश्वसनीयता का संकट / रमेश राजहंस - **22**

संस्मरण

- डॉ. चंद्रभूषण तिवारी : जनवादी आन्दोलन के प्रमुख सिद्धांतकार / चंद्रेश्वर - **24**
- आलोचना कर्म के प्रति बेहद निष्ठावान आलोचक चंद्रभूषण तिवारी / डॉ. कुंदन सिंह - **25**

स्मृति

- रामकुमार की स्मृति में / डॉ. जयश्री सिंह - **28**

डॉ. जयश्री सिंह
मो.- 9757277735

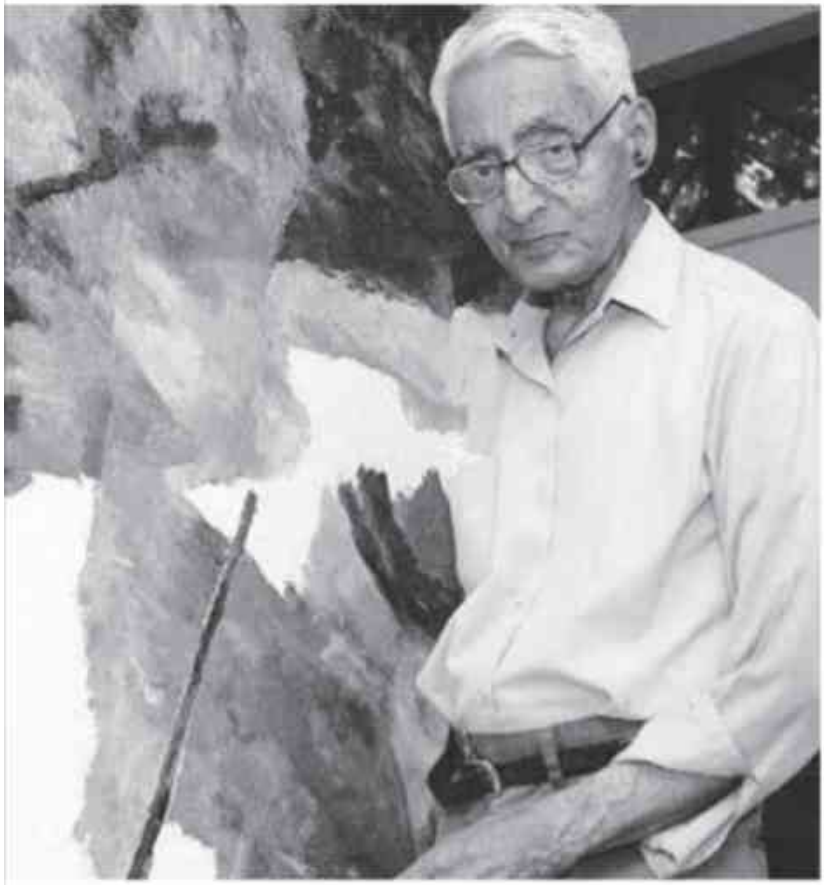

(1924 - 2018)

कथाकार और चित्रकार रामकुमार की स्मृति में

प्रिय राम...,

कैसा कसक भरा अहसास है..., जो कभी लौट के न आये उसके नाम पत्र लिखना...!! किसी बेहद अपने से लगातार पत्र प्राप्त करने और जबाब में उसे लिखते रहने की पड़ चुकी आदत तथा उपरांत की अकस्मात चुप्पी को क्या सह ले जाना आसान है? प्रिय के पत्र न मिलने पर स्वयं को लिखने से न रोक पाना, कोरी भावुकता ही है या कुछ और भी...? छोटे भाई निर्मल वर्मा के निधन के बाद रामकुमार जी ने उन्हें एक आखरी पत्र लिखा। ये जानते हुए भी कि उस पत्र को पढ़ने वाला 'प्रिय निर्मल' अब नहीं रहा। भावनाओं ने कब किसी अपने का मरना स्वीकार किया है? जब शब्द और चित्र नहीं मरते तो भाव और उनसे बने संबंध कैसे मर सकते हैं? भावों को भावों से समझा जा सकता है यही सोचकर एक संवेदनशील कहानीकार - चित्रकार को उनके मरणोपरांत उन्हीं की भावशैली में याद करने का प्रयास कर रही हूँ।

जाना तो एक न एक दिन सभी को है और 94 वर्ष की आयु कोई कम भी नहीं है पर पिछले शनिवार को प्रसिद्ध कथाकार और चित्रकार राम कुमार जी के जाने से एक अजीब सी रिक्तता का अनुभव हुआ है। पिछले तीन दिनों में उन पर अखबार अथवा मीडिया में कोई सार्थक सामग्री भी देखने में नहीं आई। आज के इस शोर शराबे, ग्लैमर और सनसनी से भरे साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में यदि रामकुमार जी के जाने से कोई हलचल नहीं हुई तो यह हमारे समय पर भी एक टिप्पणी ही है। अपने रचनाशील क्षणों में मूर्त से अमूर्त की जीवन यात्रा में वे सतत जिन जीवन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते रहे उन्हें रेखांकित करने की उत्कट इच्छा से भर गई हूँ। इसीलिए आज लिखने पर विवश हुई हूँ। 1924 में शिमला में जन्मे राम कुमार जी का नाम मकबूल फिदा हुसैन, तैयब मेहता और सैयद हैदर रजा जैसे विश्व विख्यात चित्रकारों के साथ लिया जाता रहा। वे हिन्दी कथाकार निर्मल वर्मा के बड़े भाई थे और हिन्दी की नयी कहानी युग के एक अत्यंत प्रतिभाशाली कथाकार भी रहे।

'हुस्ना बीबी तथा अन्य कहानियाँ', 'एक चेहरा', 'समुद्र', 'एक लंबा रास्ता', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'दीमक तथा अन्य कहानियाँ' उनके चर्चित कहानी संग्रह हैं। 'घर बने घर टूटे' तथा 'देर सवेर' दो उपन्यास भी उन्होंने लिखे। बाद के दिनों में उन्होंने अपना पूरा समय चित्रकला को दे दिया। कला के इस रूपांतरण पर जब भी गहराई से सोचती हूँ तो कई सवालों में घिर जाती हूँ, 'आखिरकार वो कौन सी अकुलाहट रही होगी! जिसने उन्हें शब्दों की दुनिया से सिमटकर रंगों की दुनिया में उतर आने पर विवश किया! वो कौन से भाव थे जिन्हें शब्दों में व्यक्त करना उस संवेदनशील हृदय को दुष्कर लगने लगा? चित्र भावों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है या उन्हें (अमूर्त रूप में) छिपा ले जाने का साधन...? एक कला से दूसरी कला के बीच हुए इस रूपांतरण पर किसी का ध्यान क्यों नहीं गया? संसार में ऐसे बहुत से बड़े कलाकार हुए जो जीवन में अपने अनुभव और विकास के साथ आकृतिमूलक से अमूर्तन की ओर गए हैं किंतु शब्द से चित्र की दुनिया में उतरने वाली इन प्रतिभाओं को कभी किसी ने रेखांकित क्यों नहीं किया? किसी ने इसकी व्याख्या क्यों नहीं की? ऐसे कई सवाल..., जिनके जवाब शायद ही किसी के पास हों!

अंतमुर्खी स्वभाव, आत्ममुग्धता और आत्मप्रचार से परे साहित्य और कला जगत के तमाम शोर-शराबे से एकदम दूर अत्यंत विनम्र और एकान्तप्रिय रामकुमार जी शुरू से ही निर्मल जी की तरह स्वप्नजीवी थे। संयोग से वे दोनों भाई भी थे तथा एक-दूसरे की अभिरुचियों से जुड़ कर दो प्रमुख कलाओं के संयोग को रूपायित करते थे। दोनों एक दूसरे के आंतरिक जीवन और सूक्ष्म जिज्ञासा की पैठ रखते थे और भली-भाँति जानते भी थे कि रचनाकार का जीवन भविष्य में उनकी कठिन परीक्षाएँ ले सकता है। दोनों की कल्पनाशीलता ने अपने रचना कर्म के लिए कठिन रास्तों का चुनाव किया। वे अपने-अपने क्षेत्र में स्थापित और सम्मानित भी हुए। रामकुमार जी ने जैसा गरिमामय जीवन जिया वह बाद की पीढ़ियों के लिए एक मिसाल बना रहेगा।

रामकुमार जी और उनके भाई निर्मल जी के बीच सालों पत्राचार का सिलसिला चलता रहा। पत्र रूप में मिले उनके सुसंवाद जितने दुर्लभ हैं उनके जरिये दोनों व्यक्ति विशेष को समझना उतना ही सुलभ है। उनके ये पत्र दो शीर्ष के कलाकारों को ही नहीं जोड़ते बल्कि एक ही समय में दो कलाओं के साथ-साथ दो भिन्न परिवेश को समझने का अवसर भी देते हैं। ये पत्र बताते हैं कि चित्रकार रामकुमार और लेखक निर्मल वर्मा जीवन के शंकाकुल समय में एक दूसरे का कितना बड़ा संबल रहे। विदेश में कई वर्ष रहकर लौटने के बाद जब निर्मल जी ने भाई रामकुमार जी से स्वदेश में दुबारा जड़ें जमाने की सम्भावनाओं के विषय पर पूछा तो बड़ी विनम्रता से उन्होंने निर्मल जी से अमूर्त की ओर बढ़ते अपने झुकाव और आत्म संशय की बात की। कला जगत में अपनी विलक्षण पहचान बना चुके रामकुमार जी के चित्र उनके उसी आत्मसंयम का परिचायक हैं। आजादी के बाद की उनकी कलायात्रा को भारतीय कला जगत की ऐतिहासित यात्रा के रूप में देखा जा सकता है। ■

जॉर्ज लूकाच से रामकुमार की वह ऐतिहासिक मुलाकात

बीसवीं सदी के प्रख्यात विचारक जॉर्ज लूकाच से हंगरी में (1955) रामकुमार जी की मुलाकात हुई थी। दुर्भाग्य है कि हिंदी में इस दुर्लभ दस्तावेज का कोई जिक्र नहीं। यह लगभग विस्मृति के गर्त में चला गया दस्तावेज है। उस मुलाकात में लूकाच से हुई बातचीत में रामकुमार जी ने जिन सवालों को उठाया वे आज भी प्रासंगिक हैं।

लूकाच से रामकुमार जी इस बातचीत में कुछ बेहद महत्वपूर्ण बिन्दु उभरते हैं जैसे - एक बड़े बौद्धिक का कोलाहल से दूर अपने एकान्त में रमे रहना, उससे मिलने पर अत्याधिक सहजता का अनुभव, यूरोपीय और रूसी साहित्य के बीच का कोई बुनियादी फर्क, एशियाई साहित्य की भिन्न स्थितियाँ, संसार की भिन्न सभ्यताओं में रची गयी कृतियों का मूल गुण साहित्य रसिक को एक प्रकार की 'नवीनता का आघात' देने की क्षमता, बीसवीं सदी का एक नया समय और उसकी चुनौतियाँ, कला की दुनिया में समाजवादी वैचारिक जड़ता के खतरे, कलाकार की अपनी वैयक्तिक स्वतंत्रता, लीक से हटकर निरन्तर नवीनता के उन्मेष की आवश्यकता इत्यादि। कितना महत्वपूर्ण है रामकुमार के सामने लूकाच का यह स्वीकार करना कि चार्ली चैपलिन समाजवादी नहीं, फिर भी एक महान यथार्थवादी कलाकार जरूर हैं उसकी आत्मशक्ति को अनदेखा नहीं किया जा सकता। लूकाच प्रगतिशीलता की अपनी एक व्यापक धारणा रखते हैं।

13 अप्रैल 1885 में हंगरी की राजधानी बुदापेस्ट में जन्मे जॉर्ज लूकाच को बीसवी सदी का एक शिखर दार्शनिक, साहित्य समालोचक, वामपंथी सौन्दर्यशास्त्री और साहित्यिक इतिहासकार माना जाता है। वे यूरोपीय मार्क्सवाद के संस्थापकों में से एक हैं जिन्होंने स्टालिन युग के संकीर्ण मार्क्सवाद पर अनेक प्रश्न खड़े किये और बीसवीं सदी के उभरते पूंजीवादी समाज की नयी स्थितियों के सन्दर्भ में वामपंथी विचारधारा को एक नयी धारा दी थी। लूकाच की अनेक संकल्पनाएँ संसार भर में चर्चित हुईं। लूकाच 1919 में हंगरी - सोवियत रिपब्लिक की अल्पकालीन सरकार में संस्कृति मंत्री भी रहे थे। वे कई बार सोवियत सत्तापक्ष और हंगरी की वामपंथी पार्टी की अधिकारिक विचारधारा पर सवाल उठाते रहे। नाराज बौद्धिकों और युवाओं का नेतृत्व भी करते रहे। उनका जीवन अपने समय की तमाम उथल-पुथल से भरा रहा।

राजनीतिक विचारक के अलावा वे एक गहरे कला विवेचक भी थे। कला में यथार्थवाद की अवधारणा, उपन्यास की संरचना, सत्ता तंत्र और बुद्धिजीवियों के द्वंद्व आदि के संबंध में लूकाच के विचारों ने संसार भर के बौद्धिकों, लेखकों, कलाकारों को गहरे प्रभावित किया। 'हिस्ट्री एंड क्लास कॉशसनेस', 'थ्यॉरी ऑफ नॉवेल', 'गेटे एंड हिज एज', 'मीनिंग ऑफ कंटेम्पोरेरी रियलिज्म' उनकी विश्वविख्यात पुस्तकें हैं। अकादमिक आलोचना के क्षेत्र में 'सामाजिक यथार्थ' और 'आलोचनात्मक यथार्थ' की जिस मूलगामी बहस को उन्होंने अपने समय में उठाया था वह आज भी एक बेहद विचारोत्तेजक बहस मानी जाती है। यह भी दुर्भाग्य है कि हमारे ज्यादातर फामूर्लाबाज वापपंथी साहित्य आलोचकों ने लूकाच से कुछ भी नहीं सीखा है।

4 जून 1971 को लूकाच का निधन हुआ। लूकाच की स्मृति में बुदापेस्ट में डेन्यूब नदी के किनारे उनके घर को उनका संग्रहालय बनाया गया था। वहीं के एक प्रसिद्ध पार्क में उनकी प्रतिमा भी स्थापित की गयी किंतु यह एक विडम्बना ही कही जायेगी कि फासिस्टों का पतन हो जाने के आधी सदी बाद अभी पिछले वर्ष ही वर्तमान सरकार ने उनकी प्रतिमा को वहाँ से हटाने का निर्णय ले लिया। क्यों सिर्फ इसलिए कि लूकाच वामपंथी विचारक थे। यह हमारे इस नये समय की पहचान है। यह विचारों, महान सपनों और बौद्धिक संस्कृति से नफरत का युग है। जीवित विचार को दफन करने और झूठ के तंत्र को फैलाने का समय है।

लूकाच जैसे एक महान विचारक की मूर्ति को हटाया जाता है। मूर्तियों को क्षति पहुँचाना, उन्हें तोड़ना और हटाना केवल भारत की ही समस्या नहीं यह विश्व भर में घटित हो रहा है। रूस, अमेरिका, मध्य एशिया, चीन सहित लगभग पूरे संसार में विचारवान व्यक्तियों की प्रतिमाओं को हटाने की मुहिम चल रही है। कहा जा सकता है कि पूरे विश्व में यह एक विचार विरोधी समय है। ऐसा लगने लगा है कि संसार की वर्तमान सभ्यताओं को विचारों की आवश्यकता नहीं रही। उन्हें केवल आज्ञाकारी भीड़ तंत्र चाहिए। हम एक ऐसे समय में जी रहे हैं जिसमें सत्ताओं के नाम बदलते हैं, चेहरे बदलते हैं लेकिन उन सारी सत्ताओं का मूल चरित्र लगभग एक सा है। इसलिए विचार विहीन समय में लूकाच के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। जॉर्ज लूकाच पर लिखा गया रामकुमार जी का यह ऐतिहासिक संस्मरण आज भी हमारे लिए एक नया अर्थ रखता है। ■

- डॉ. जयश्री सिंह, मुंबई